Brihaspati Stotram

The hymn to Jupiter, teacher of the gods

देवगुरु बृहस्पति का स्तोत्र

The hymn to Jupiter that most households recite on Thursdays, from the *Skanda Purana*. The full text comes first for unbroken recitation, then each verse with its meaning in English and Hindi.

The full text सम्पूर्ण पाठ

श्रीबृहस्पतिस्तोत्रम्

विनियोगः

अस्य श्रीबृहस्पतिस्तोत्रस्य गृत्समद ऋषिः,
अनुष्टुप् छन्दः, बृहस्पतिर्देवता,
बृहस्पतिप्रीत्यर्थं जपे विनियोगः ॥

गुरुर्बृहस्पतिर्जीवः सुराचार्यो विदांवरः ।
वागीशो धिषणो दीर्घश्मश्रुः पीताम्बरो युवा ॥ १ ॥

सुधादृष्टिर्ग्रहाधीशो ग्रहपीडापहारकः ।
दयाकरः सौम्यमूर्तिः सुरार्च्यः कुड्मलद्युतिः ॥ २ ॥

लोकपूज्यो लोकगुरुर्नीतिज्ञो नीतिकारकः ।
तारापतिश्चाङ्गिरसो वेदवेद्यः पितामहः ॥ ३ ॥

भक्त्या बृहस्पतिं स्मृत्वा नामान्येतानि यः पठेत् ।
अरोगी बलवान् श्रीमान् पुत्रवान् स भवेन्नरः ॥ ४ ॥

जीवेद्वर्षशतं मर्त्यः पापं नश्यति नश्यति ।
यः पूजयेद्गुरुदिने पीतगन्धाक्षताम्बरैः ॥ ५ ॥

पुष्पदीपोपहारैश्च पूजयित्वा बृहस्पतिम् ।
ब्राह्मणान् भोजयित्वा च पीडाशान्तिर्भवेद्गुरोः ॥ ६ ॥

॥ इति श्रीस्कन्दपुराणे बृहस्पतिस्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

The full text in Roman letters रोमन लिपि में पाठ

With diacritics, as a guide to pronunciation.

viniyogaḥ

asya śrībṛhaspatistotrasya gṛtsamada ṛṣiḥ,
anuṣṭup chandaḥ, bṛhaspatirdevatā,
bṛhaspatiprītyarthaṁ jape viniyogaḥ ||

gururbṛhaspatirjīvaḥ surācāryo vidāṁvaraḥ |
vāgīśo dhiṣaṇo dīrghaśmaśruḥ pītāmbaro yuvā || 1 ||

sudhādṛṣṭirgrahādhīśo grahapīḍāpahārakaḥ |
dayākaraḥ saumyamūrtiḥ surārcyaḥ kuḍmaladyutiḥ || 2 ||

lokapūjyo lokagururnītijño nītikārakaḥ |
tārāpatiścāṅgiraso vedavedyaḥ pitāmahaḥ || 3 ||

bhaktyā bṛhaspatiṁ smṛtvā nāmānyetāni yaḥ paṭhet |
arogī balavān śrīmān putravān sa bhavennaraḥ || 4 ||

jīvedvarṣaśataṁ martyaḥ pāpaṁ naśyati naśyati |
yaḥ pūjayedgurudine pītagandhākṣatāmbaraiḥ || 5 ||

puṣpadīpopahāraiśca pūjayitvā bṛhaspatim |
brāhmaṇān bhojayitvā ca pīḍāśāntirbhavedguroḥ || 6 ||

|| iti śrīskandapurāṇe bṛhaspatistotraṁ sampūrṇam ||

ASTROSHALA

About this text परिचय

Brihaspati is the teacher of the gods and the planet Jupiter, Guru, in Jyotisha: the giver of wisdom, children, right conduct, and good fortune. This short hymn is the one most households recite on Thursdays, Jupiter's day.

It opens by naming him in one breath as Guru, Brihaspati, and Jiva, and then strings together his titles: lord of speech, the long-bearded one clad in yellow, the remover of planetary affliction. The last three verses describe the Thursday worship itself: yellow perfume, unbroken rice, yellow cloth, flowers, lamps, and the feeding of Brahmins.

Its viniyoga names the seer Gritsamada, the sage to whom the *Rigveda* assigns its second book, including hymn 2.23 to Brihaspati, whose last verse is still recited for Jupiter in the worship of the nine planets. The hymn itself comes from the *Skanda Purana*, as its closing line states.

बृहस्पति देवताओं के गुरु हैं और ज्योतिष में गुरु ग्रह: ज्ञान, संतान, सदाचार और सौभाग्य के दाता। यह छोटा स्तोत्र वही है जिसका पाठ अधिकतर घरों में गुरुवार, बृहस्पति के दिन, होता है।

इसकी शुरुआत उन्हें एक साथ गुरु, बृहस्पति और जीव कहकर होती है, फिर उनके नाम एक माला की तरह आते हैं: वाणी के स्वामी, लंबी दाढ़ी और पीले वस्त्र वाले, ग्रहपीड़ा हरने वाले। अंतिम तीन श्लोक गुरुवार की पूजा का वर्णन करते हैं: पीला गंध, अक्षत, पीले वस्त्र, फूल, दीप और ब्राह्मण भोजन।

इसके विनियोग में ऋषि गृत्समद का नाम है, जिन्हें *ऋग्वेद* का दूसरा मंडल समर्पित है, जिसमें बृहस्पति का सूक्त 2.23 भी है; उसका अंतिम मंत्र आज भी नवग्रह पूजा में गुरु के लिए पढ़ा जाता है। यह स्तोत्र *स्कन्द पुराण* से है, जैसा इसकी अंतिम पंक्ति बताती है।

Deity देवता	Brihaspati, the planet Jupiter (Guru)	बृहस्पति, गुरु ग्रह
Seer (rishi) ऋषि	Gritsamada, as the viniyoga states	गृत्समद (विनियोग के अनुसार)
Where it is found स्रोत	*Skanda Purana*	*स्कन्द पुराण*
Metre छन्द	Anushtubh	अनुष्टुप्
Day named दिन	Thursday, Guru's day (verse 5)	गुरुवार (श्लोक 5)

How it is recited पाठ की विधि

The hymn names its own day in verse 5: Thursday. It is usually recited in the morning after bathing, facing east or north-east, with a yellow flower or a little turmeric-coloured rice before Guru's image. For an adverse Jupiter, the hymn sits beside the worship and charity the

श्लोक 5 स्वयं दिन बताता है: गुरुवार। प्रायः सुबह स्नान के बाद, पूर्व या ईशान की ओर मुख करके, गुरु की प्रतिमा के सामने पीला फूल या हल्दी लगे अक्षत रखकर इसका पाठ किया जाता है। प्रतिकूल गुरु के लिए यह स्तोत्र उसी पूजा और दान के साथ चलता है जिसका वर्णन

last two verses describe; it is traditional practice and carries no promise of a result.

अंतिम दो श्लोकों में है; यह पारंपरिक साधना है, किसी निश्चित फल का वचन नहीं।

ASTROSHALA

Verse by verse, with meaning श्लोक, अर्थ सहित

Each verse again, with its pronunciation in Roman letters and its meaning in English and Hindi.

विनियोगः

अस्य श्रीबृहस्पतिस्तोत्रस्य गृत्समद ऋषिः,
अनुष्टुप् छन्दः, बृहस्पतिर्देवता,
बृहस्पतिप्रीत्यर्थं जपे विनियोगः ॥

asya śrībṛhaspatistotrasya gṛtsamada ṛṣiḥ,
anuṣṭup chandaḥ, bṛhaspatirdevatā,
bṛhaspatiprītyarthaṁ jape viniyogaḥ ||

MEANING

Of this hymn to Brihaspati, Gritsamada is the seer, anushtubh the metre, and Brihaspati the deity; it is taken up in recitation for Brihaspati's pleasure.

अर्थ

इस बृहस्पति स्तोत्र के ऋषि गृत्समद हैं, छन्द अनुष्टुप् है, और देवता बृहस्पति हैं; बृहस्पति की प्रसन्नता के लिए इसका जप में विनियोग किया जाता है।

गुरुर्बृहस्पतिर्जीवः सुराचार्यो विदांवरः ।
वागीशो धिषणो दीर्घश्मश्रुः पीताम्बरो युवा ॥ १ ॥

gururbṛhaspatirjīvaḥ surācāryo vidāṁvaraḥ |
vāgīśo dhiṣaṇo dīrghaśmaśruḥ pītāmbaro yuvā || 1 ||

MEANING

Guru, Brihaspati, Jiva, teacher of the gods, best of the learned; lord of speech, the wise one, long-bearded, clad in yellow, ever young.

अर्थ

गुरु, बृहस्पति, जीव, देवताओं के आचार्य, विद्वानों में श्रेष्ठ; वाणी के स्वामी, बुद्धिमान, लंबी दाढ़ी वाले, पीताम्बरधारी, सदा युवा।

सुधादृष्टिर्ग्रहाधीशो ग्रहपीडापहारकः ।
दयाकरः सौम्यमूर्तिः सुरार्च्यः कुड्मलद्युतिः ॥ २ ॥

sudhādṛṣṭirgrahādhīśo grahapīḍāpahārakaḥ |
dayākaraḥ saumyamūrtiḥ surārcyaḥ kuḍmaladyutiḥ || 2 ||

MEANING

Whose glance is nectar, lord of the planets, remover of planetary affliction; compassionate, gentle in form, worshipped by the gods, radiant as a bud.

अर्थ

जिनकी दृष्टि अमृत है, ग्रहों के अधिपति, ग्रहपीड़ा हरने वाले; दयालु, सौम्य स्वरूप, देवताओं द्वारा पूजित, कली के समान कांतिमान।

लोकपूज्यो लोकगुरुर्नीतिज्ञो नीतिकारकः ।
तारापतिश्चाङ्गिरसो वेदवेद्यः पितामहः ॥ ३ ॥

lokapūjyo lokagururnītijño nītikārakaḥ |
tārāpatiścāṅgiraso vedavedyaḥ pitāmahaḥ || 3 ||

MEANING

Revered by the world, teacher of the world, knower and maker of right conduct; husband of Tara, son of Angiras, known through the Veda, the grandfather.

अर्थ

संसार द्वारा पूजित, लोकगुरु, नीति के ज्ञाता और नीति के निर्माता; तारा के पति, अंगिरा के पुत्र, वेदों से जाने जाने वाले, पितामह।

भक्त्या बृहस्पतिं स्मृत्वा नामान्येतानि यः पठेत् ।
अरोगी बलवान् श्रीमान् पुत्रवान् स भवेन्नरः ॥ ४ ॥

bhaktyā bṛhaspatiṁ smṛtvā nāmānyetāni yaḥ paṭhet |
arogī balavān śrīmān putravān sa bhavennaraḥ || 4 ||

MEANING

Whoever remembers Brihaspati with devotion and recites these names becomes free of illness, strong, prosperous, and blessed with children.

अर्थ

जो भक्तिपूर्वक बृहस्पति का स्मरण करके इन नामों का पाठ करता है, वह मनुष्य निरोगी, बलवान, धनवान और संतानवान होता है।

जीवेद्वर्षशतं मर्त्यः पापं नश्यति नश्यति ।
यः पूजयेद्गुरुदिने पीतगन्धाक्षताम्बरैः ॥ ५ ॥

jīvedvarṣaśataṁ martyaḥ pāpaṁ naśyati naśyati |
yaḥ pūjayedgurudine pītagandhākṣatāmbaraiḥ || 5 ||

MEANING

That person lives a hundred years, and sin is destroyed, destroyed, who worships Guru on his own day with yellow perfume, unbroken rice, and cloth.

अर्थ

जो गुरुवार को पीले गंध, अक्षत और वस्त्र से पूजा करता है, वह सौ वर्ष जीता है, और उसका पाप नष्ट होता है, नष्ट होता है।

पुष्पदीपोपहारैश्च पूजयित्वा बृहस्पतिम् ।
ब्राह्मणान् भोजयित्वा च पीडाशान्तिर्भवेद्गुरोः ॥ ६ ॥

puṣpadīpopahāraiśca pūjayitvā bṛhaspatim |
brāhmaṇān bhojayitvā ca pīḍāśāntirbhavedguroḥ || 6 ||

MEANING

When Brihaspati is worshipped with flowers, lamps, and offerings, and Brahmins are fed, the affliction of Guru is pacified.

अर्थ

फूल, दीप और भेंट से बृहस्पति की पूजा करके, और ब्राह्मणों को भोजन कराकर, गुरु ग्रह की पीड़ा शांत होती है।

॥ इति श्रीस्कन्दपुराणे बृहस्पतिस्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

|| iti śrīskandapurāṇe bṛhaspatistotraṁ sampūrṇam ||

MEANING

Thus ends the hymn to Brihaspati, in the Shri Skanda Purana.

अर्थ

इस प्रकार श्री स्कन्द पुराण में बृहस्पति स्तोत्र पूर्ण हुआ।

Texts referred to संदर्भ ग्रंथ

1. *Skanda Purana*: the Brihaspati Stotram, as its closing line states.
2. *Rigveda* 2.23, the hymn of Gritsamada to Brihaspati.
3. AstroShala, “Jupiter in Leo 2026 to 2028”, where this hymn appears with its meaning.

Not sure which practice suits your chart?

The right hymn, and the right time for it, depends on your own chart and its periods. Ask one focused question and receive a written answer worked out from your birth chart.
आपकी कुंडली के लिए कौन सा पाठ उचित है, यह जानने के लिए अपना एक प्रश्न पूछें।

astroshala.com/product/ask-a-question

Shared for devotion and study. Recitation is traditional practice and carries no promise of a particular result; it is not a substitute for medical, legal, or financial advice. © AstroShala.com

Notes and recitation record टिप्पणी और पाठ का विवरण

Date दिनांक	Recitations पाठ संख्या	Notes टिप्पणी

ASTROSHALA